मूर्ख बन्दर

एक शहर में एक मंदिर बन रहा था। वहाँ पर एक बरगद के पेड़ पर बंदरों का एक झुण्ड रहता था। एक दिन जब सारे कारीगर दोपहर का खाना खाने गए हुए थे, तब बंदरों के झुण्ड ने वहाँ पर उत्पात मचाना शुरू कर दिया।

एक बन्दर को आधी कटी हुई लकड़ी दिखी। उसमें एक गुल्ली फँसी हुई थी। बन्दर ने उस गुल्ली को निकालने की पूरी कोशिश की। काफी मेहनत के बाद वह गुल्ली एक झटके से निकल गयी। लेकिन इस बीच उस बन्दर की टाँग उस आधी कटी लकड़ी में फँस गयी। अंत में ज्यादा दर्द होने की वजह से वह बन्दर मर गया।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि किसी दूसरे के मामले में अपनी टाँग नहीं अड़ानी चाहिए।

अभ्यास कार्य

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद की मदद से लिखिए–

प्र.1 शहर में क्या बन रहा था ?

.....

प्र. 2 बन्दरों का झुण्ड कहाँ रहता था ?

.....

प्र. 3 एक बन्दर को क्या दिखाई दिया ?

.....

प्र. 4 कहानी पढ़ कर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

एक दिन जब सारे कारीगर ..... खाने गए हुए थे, तब ..... ने वहाँ पर ..... मचाना शुरू कर दिया।

प्र. 5 बन्दर की टाँग किसमें फँस गई थी ?

.....

प्र. 6 शब्दों को शुद्ध करके लिखो–

दौपहर :– .....

टाग :– .....

ऊत्पात :– .....

रवीन्द्र कुमार वर्मा
पी.आर.टी.
के.वि. अनन्तनाग